* अज्ञानी - जीव *

सारी उम्र चलनी में,

पानी हम भरते रहे।

अपनी समझ से,

बहुत बड़ा काम करते रहे।।

हम अज्ञान को ज्ञान,

अविद्या को विद्या कहते रहे।

परमात्मा जाना नहीं,

अपने को ज्ञानी कहते रहे।।

जानना था केवल परमात्मा,

हम देवताओं को ही परमात्मा कहते रहे।

परमात्मा एक है केवल,

हम तैंतीस कोटि को परमात्मा कहते रहे।।

करना था आत्मघट परगट,

हम इन्द्रियों, मन और सुरत से जपते रहे।

करना था मन को सन्मुख,

हम सुमिरन, ध्यान, भजन ही करते रहे।।

करना था मन को निर्मल केवल,

हम और ही कर्मों के जाल में फंसते रहे।

होना है तन, मन, सुरत से अलग,

हम योग द्वारा इन्हीं में ही फंसते रहे।

होना है मन और माया से न्यारा,

हम अज्ञान बस मन और माया में ही फंसते रहे।।

कारण कौन था,

इतना सब हुआ कैसे।

हम अज्ञान बस,

गुरुओं को ही सद्गुरु कहते रहे।।

सुरेशा दयाल

ब्रम्हज्ञान योग संस्थान मोचकला

बिसवाँ सीतापुर (उत्तर प्रदेश)

सम्पर्क सूत्र - (9984257903)